



# ज्ञानविधि

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)  
3049-2327(Print)

IIFS Impact Factor-4.5

Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026

Page No.- 106-110

©2026 Gyanvidha

<https://journal.gyanvidha.com>

**Author's :**

## 1. रानी परिहार

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, विज्ञान एवं मानविकी संकाय, एस आर एम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, वड़पलनी, चेन्नई.

## 2. डॉ. निशा मुरलीधरन

शोध मार्गदर्शिका, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, विज्ञान एवं मानविकी संकाय, एस आर एम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, वड़पलनी, चेन्नई.

Corresponding Author :

## रानी परिहार

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, विज्ञान एवं मानविकी संकाय, एस आर एम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, वड़पलनी, चेन्नई.

## प्रवासी हिंदी साहित्य का परिचय

**शोध सार :** प्रवासी हिंदी साहित्य आधुनिक हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण और व्यापक धारा है। यह साहित्य उन लेखकों द्वारा रचा गया है जो भारत से बाहर विभिन्न देशों में रहते हुए भी हिंदी भाषा, भारतीय संस्कृति, स्मृति, अस्मिता, संघर्ष और प्रवासजन्य अनुभवों को अभिव्यक्त करते हैं। प्रवासी साहित्य केवल भौगोलिक विस्थापन की कथा नहीं है, बल्कि यह पहचान, सांस्कृतिक द्वंद्व, भाषा-संरक्षण, नस्लीय अनुभव, आर्थिक संघर्ष और मनुष्य की जड़ें तलाशने की चेतना का साहित्य है। प्रस्तुत शोध-पत्र में प्रवासी हिंदी साहित्य की अवधारणा, विकास, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, विषय-वस्तु, भाषा-शैली तथा उसकी समकालीन प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

**बीज शब्द :** प्रवासी साहित्य, हिंदी साहित्य, विस्थापन, अस्मिता, सांस्कृतिक द्वंद्व, वैश्विक हिंदी।

**प्रस्तावना :** मनुष्य सदैव बेहतर जीवन, रोजगार, शिक्षा और सामाजिक परिस्थितियों की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर प्रवास करता रहा है। भारतीयों का विदेशों में प्रवास विशेष रूप से औपनिवेशिक काल में बढ़ा, जब बड़ी संख्या में भारतीयों को गिरमिटिया मजदूरों के रूप में विभिन्न देशों में भेजा गया। विदेशों में रहते हुए भी भारतीयों ने अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखा। हिंदी भाषा इसी सांस्कृतिक चेतना का माध्यम बनी और प्रवासी हिंदी साहित्य का जन्म हुआ।

प्रवासी हिंदी साहित्य केवल भावनात्मक स्मृतियों का साहित्य नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक संघर्ष, पहचान संकट, सामाजिक विषमता और वैश्विक अनुभवों का साहित्य है। इस साहित्य ने हिंदी को अंतरराष्ट्रीय पहचान प्रदान की है।

आज का युग वैश्वीकरण का युग है। आज मनुष्य केवल एक देश, एक संस्कृति या एक सीमा तक सीमित नहीं रह गया है। रोजगार,

शिक्षा, व्यापार, राजनीतिक परिस्थितियाँ और व्यक्तिगत कारणों से लोग अपने देश से बाहर जाकर बस रहे हैं। इस प्रवास ने केवल सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को ही नहीं बदला, बल्कि साहित्य को भी एक नया आयाम दिया है। हिंदी साहित्य में प्रवासी लेखन ने भारतीय समाज, संस्कृति और भाषा को एक वैश्विक धरातल प्रदान किया है।

प्रवासी हिंदी साहित्य उन रचनाकारों की अभिव्यक्ति है जो भारत से बाहर रहकर भी हिंदी में लिखते हैं और अपने अनुभवों के माध्यम से एक नई साहित्यिक चेतना का निर्माण करते हैं। यह साहित्य प्रवास की पीड़ा, स्मृति की ऊष्मा, पहचान की तलाश और नई सभ्यता के साथ संवाद का साहित्य है।

**प्रवासी हिंदी साहित्य का अर्थ :** विदेशों में बसे भारतीय मूल के साहित्यकारों द्वारा हिंदी भाषा में रचित साहित्य को प्रवासी हिंदी साहित्य कहा जाता है। इसमें प्रवासी जीवन की समस्याएँ, सांस्कृतिक द्वंद्व, मातृभूमि के प्रति लगाव, नई संस्कृति के साथ सामंजस्य तथा पहचान का संकट प्रमुख रूप से व्यक्त होता है।

प्रवासी साहित्य को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

1. गिरमिटिया प्रवासी साहित्य
2. आधुनिक प्रवासी साहित्य

गिरमिटिया साहित्य उन भारतीय मजदूरों के अनुभवों को अभिव्यक्त करता है जिन्हें ब्रिटिश शासन के दौरान मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम आदि देशों में भेजा गया था। आधुनिक प्रवासी साहित्य शिक्षित और पेशेवर भारतीयों के अनुभवों को प्रस्तुत करता है।

‘प्रवासी’ शब्द का अर्थ है—अपने मूल स्थान से बाहर जाकर किसी अन्य स्थान पर रहना। जब कोई हिंदी भाषी लेखक भारत से बाहर रहकर हिंदी में रचना करता है, तो उसकी रचनाएँ प्रवासी हिंदी साहित्य के अंतर्गत आती हैं। प्रवासी साहित्य केवल विदेश में रहकर लिखी गई रचनाओं का नाम नहीं है, बल्कि वह साहित्य है जिसमें प्रवास की अनुभूति, विस्थापन की पीड़ा, सांस्कृतिक टकराव, भाषा-संरक्षण और आत्म-अन्वेषण के तत्व प्रमुख होते हैं। इस साहित्य में जन्मभूमि की स्मृति, विदेश में जीवन-संघर्ष, परिवार का विघटन, नस्लीय भेदभाव, पहचान-संकट और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण जैसी स्थितियाँ दिखाई देती हैं।

**प्रवासी हिंदी साहित्य का विकास :** प्रवासी हिंदी साहित्य का विकास भारतीय प्रवास के इतिहास से जुड़ा है। उन्नीसवीं शताब्दी में जब भारतीय मजदूरों को गिरमिटिया प्रथा के अंतर्गत फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में ले जाया गया, तभी प्रवासी चेतना की नींव पड़ी। इन लोगों ने अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराओं को बचाने का प्रयास किया।

धीरे-धीरे जब शिक्षित भारतीय विदेशों में बसने लगे, तब प्रवासी साहित्य ने अधिक सशक्त रूप लिया। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और विशेषतः वैश्वीकरण के बाद प्रवासी हिंदी लेखन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, खाड़ी देशों और यूरोप में बसे हिंदी रचनाकारों ने इस साहित्य को समृद्ध किया।

इसे हम तीन चरणों में बाँट सकते हैं -

1. प्रारंभिक चरण : उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय मजदूरों को विदेशों में भेजा गया। वहाँ उन्होंने लोकगीतों, भजनों और संस्मरणों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। यही प्रवासी हिंदी साहित्य की प्रारंभिक अवस्था थी।
2. मध्य चरण : बीसवीं शताब्दी में मॉरीशस, फिजी और सूरीनाम में हिंदी पत्रकारिता तथा साहित्यिक संस्थाओं का विकास हुआ। हिंदी कविता, कहानी और उपन्यास लेखन प्रारंभ हुआ।
3. आधुनिक चरण : वैश्वीकरण के दौर में अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और यूरोप में बसे भारतीय लेखकों ने आधुनिक जीवन, अकेलापन, सांस्कृतिक संकट और बहुसांस्कृतिक समाज की समस्याओं को साहित्य का विषय बनाया।

**प्रवासी हिंदी साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ :**

1. भारतीय संस्कृति का संरक्षण : प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति, परंपरा, त्योहार, परिवार व्यवस्था और धार्मिक मूल्यों का चित्रण मिलता है। लेखक विदेशी परिवेश में भारतीयता को सुरक्षित रखने का प्रयास करते हैं।
2. विस्थापन और पहचान का संकट : प्रवासी व्यक्ति दो संस्कृतियों के बीच स्वयं को असहज महसूस करता है। यह मानसिक संघर्ष साहित्य में प्रमुख विषय के रूप में उपस्थित होता है।
3. मातृभूमि के प्रति भावनात्मक लगाव : प्रवासी साहित्य में भारत की स्मृतियाँ, गाँव, भाषा और सामाजिक संबंधों के प्रति गहरा लगाव दिखाई देता है।
4. बहुसांस्कृतिक अनुभव : विदेशी समाज में रहते हुए प्रवासी लेखक विभिन्न संस्कृतियों के संपर्क में आते हैं। इससे उनके साहित्य में व्यापक दृष्टिकोण विकसित होता है।
5. भाषा का वैश्विक स्वरूप : प्रवासी हिंदी साहित्य ने हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान किया है।
6. विस्थापन और स्मृति : प्रवासी साहित्य का सबसे प्रमुख तत्व है—विस्थापन। व्यक्ति अपने देश, मिट्टी, परिवार और सांस्कृतिक परिवेश से दूर होकर एक नए वातावरण में जीता है। इस दूरी के कारण स्मृति एक गहरी साहित्यिक शक्ति बन जाती है। लेखक अपने बचपन, गाँव, भाषा, त्योहार, भोजन और पारिवारिक संबंधों को बार-बार याद करता है।
7. पहचान का संकट : प्रवासी व्यक्ति न तो पूरी तरह अपने मूल देश का रह जाता है, न ही विदेशी समाज का पूरी तरह अंग बन पाता है। यही द्वंद्व उसकी पहचान को जटिल बनाता है। प्रवासी साहित्य में “मैं कौन हूँ?” और “मैं कहाँ का हूँ?” जैसे प्रश्न बार-बार उभरते हैं।
8. सांस्कृतिक संघर्ष : विदेशी समाज की जीवन-शैली, मूल्य और व्यवहार भारतीय संस्कृति से भिन्न होते हैं। परिणामस्वरूप प्रवासी लेखक सांस्कृतिक टकराव का अनुभव करता है। वह परंपरा और आधुनिकता, पूर्व और पश्चिम, स्थानीय और वैश्विक के बीच संतुलन खोजता है।
9. भाषा-संरक्षण : प्रवासी हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष भाषा की रक्षा है। विदेशों में रहकर भी हिंदी में लिखना केवल साहित्यिक कार्य नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण भी है। यह हिंदी की वैश्विक उपस्थिति को सशक्त करता है।
10. बहुसांस्कृतिक चेतना : प्रवासी साहित्य एकांगी नहीं, बल्कि बहुसांस्कृतिक दृष्टि से युक्त होता है। उसमें कई भाषाएँ, संस्कृतियाँ और जीवन-दृष्टियाँ एक साथ दिखाई देती हैं। यह साहित्य संकीर्ण राष्ट्रीयता से आगे बढ़कर वैश्विक मानवीयता का संदेश देता है।

### **प्रवासी हिंदी साहित्य की विषय-वस्तु :**

जड़ों की खोज - प्रवासी लेखक बार-बार अपनी जड़ों की ओर लौटता है। उसकी रचनाओं में भारत, माँ, गाँव, भाषा, बचपन, रिश्ते और स्मृतियाँ बार-बार आती हैं। यह लौटना भौतिक कम और भावनात्मक अधिक होता है।

परिवार और संबंध - प्रवासी जीवन में परिवार की संरचना बदल जाती है। संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ते हुए संबंधों में दूरी आती है। इसलिए कई रचनाओं में अकेलापन, पीढ़ियों का अंतर और भावनात्मक अलगाव प्रमुख विषय हैं।

नस्लीय भेदभाव और सामाजिक असुरक्षा - कई प्रवासी लेखकों ने विदेशी समाज में रंग, जाति, भाषा और राष्ट्रीयता के आधार पर होने वाले भेदभाव को व्यक्त किया है। यह साहित्य मानवाधिकार और समानता की चेतना को भी उजागर करता है।

आर्थिक संघर्ष - प्रवासी जीवन केवल सांस्कृतिक नहीं, आर्थिक संघर्ष भी है। नौकरी, स्थायित्व, नागरिकता, सामाजिक सुरक्षा और अनिश्चित भविष्य जैसे प्रश्न इस साहित्य में केंद्रीय हैं।

स्त्री अनुभव - प्रवासी साहित्य में स्त्री की स्थिति भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। प्रवासी स्त्री को दोहरा संघर्ष झेलना

पड़ता है—एक प्रवासी होने का और दूसरा स्त्री होने का। उसकी रचनाओं में स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, अकेलापन और अस्मिता के प्रश्न प्रकट होते हैं।

**प्रवासी हिंदी साहित्य की भाषा और शैली :** प्रवासी हिंदी साहित्य की भाषा अत्यंत रोचक और बहुरंगी होती है। इसमें खड़ी बोली हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी, भोजपुरी, अवधी, पंजाबी, गुजराती तथा अन्य स्थानीय भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं। यह मिश्रित भाषा प्रवासी जीवन की वास्तविकता को अधिक प्रामाणिक बनाती है।

शैली की दृष्टि से यह साहित्य आत्मकथात्मक, स्मृतिपरक, चित्रात्मक और संवेदनशील होता है। कई रचनाएँ डायरी, संस्मरण, कथा, कविता, निबंध और उपन्यास के रूप में सामने आई हैं। इसमें भावुकता के साथ-साथ बौद्धिक विश्लेषण भी मिलता है।

**प्रमुख प्रवासी हिंदी साहित्यकार और कृतियाँ :** प्रवासी हिंदी साहित्य को कई रचनाकारों ने समृद्ध किया है। मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन और अन्य देशों में बसे हिंदी लेखकों ने अपनी महत्वपूर्ण पहचान बनाई है।

प्रमुख प्रवासी रचनाकारों में कुछ नाम इस प्रकार लिए जा सकते हैं— रामदेव धुरंधर, गिरधारीलाल 'जगत', ओमप्रकाश जैन, कृष्ण बिहारी, राजेंद्र यादव, गिरिराज किशोर, ममता कालिया, उषा प्रियंवदा, हरिशंकर आदेश, सुषम बेदी, तेजेन्द्र शर्मा, अभिमन्यु अनंत, राकेश पांडेय।

**प्रवासी हिंदी साहित्य का महत्व :** प्रवासी हिंदी साहित्य ने हिंदी को केवल भारत तक सीमित नहीं रहने दिया, बल्कि उसे विश्वभाषा बनने की दिशा में आगे बढ़ाया।

प्रवासी हिंदी साहित्य का महत्व अनेक स्तरों पर है।

पहला, यह हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय मंच पर स्थापित करता है।

दूसरा, यह भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार में सहायक है।

तीसरा, यह विस्थापन और पहचान जैसे आधुनिक प्रश्नों को गहराई से प्रस्तुत करता है।

चौथा, यह भारतीय और विदेशी जीवन के बीच सेतु का कार्य करता है।

पाँचवाँ, यह हिंदी साहित्य को नई विषय-वस्तु, नई भाषा और नई दृष्टि प्रदान करता है।

यह साहित्य हमें सिखाता है कि भाषा केवल संचार का साधन नहीं, बल्कि स्मृति, संस्कार और अस्मिता का भी माध्यम है।

**समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता :** आज डिजिटल माध्यमों, सोशल मीडिया, ऑनलाइन पत्रिकाओं और अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों के कारण प्रवासी हिंदी साहित्य का दायरा लगातार बढ़ रहा है। नई पीढ़ी के लेखक वैश्विक अनुभवों को हिंदी में अभिव्यक्त कर रहे हैं। समकालीन प्रवासी साहित्य में स्त्री विमर्श, पहचान संकट, नस्लवाद, वैश्वीकरण और सांस्कृतिक राजनीति जैसे विषय प्रमुख हैं। आज जब लाखों भारतीय विदेशों में रह रहे हैं, तब प्रवासी हिंदी साहित्य और अधिक प्रासंगिक हो गया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, ई-पत्रिकाएँ और ऑनलाइन मंचों ने प्रवासी लेखन को नई गति दी है। अब हिंदी लेखन भौगोलिक सीमाओं से बाहर निकलकर एक वैश्विक साहित्यिक समुदाय का निर्माण कर रहा है।

यह साहित्य नई पीढ़ी को अपनी भाषा और संस्कृति से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। साथ ही यह प्रवासी भारतीयों की समस्याओं, आशाओं और उपलब्धियों को भी सामने ला रहा है।

**निष्कर्ष :** प्रवासी हिंदी साहित्य हिंदी साहित्य की समृद्ध और सशक्त धारा है। यह साहित्य भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़ा होने के साथ-साथ वैश्विक अनुभवों का भी प्रतिनिधित्व करता है। इसमें प्रवासी जीवन की पीड़ा, संघर्ष, स्मृति और सांस्कृतिक चेतना का गहरा चित्रण मिलता है। प्रवासी साहित्य ने हिंदी को अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान किया है तथा

हिंदी भाषा और साहित्य को नई दिशा दी है। वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में प्रवासी हिंदी साहित्य का महत्व और अधिक बढ़ गया है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्रवासी हिंदी साहित्य आधुनिक हिंदी साहित्य की एक सशक्त, संवेदनशील और विचारोत्तेजक धारा है। यह साहित्य केवल विदेश में बसे भारतीयों की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि मनुष्य की जड़ों, स्मृतियों, पहचान और सांस्कृतिक संघर्षों की कहानी है। इसमें भाषा की शक्ति, संस्कृति की गहराई और मानवीय अनुभवों की विविधता समाहित है। प्रवासी हिंदी साहित्य हिंदी को विश्वव्यापी बनाता है और यह सिद्ध करता है कि भाषा सीमाओं में बंधी नहीं होती। वह जहाँ बोली, समझी और जिंदा रखी जाती है, वहीं उसका वास्तविक विस्तार होता है। इस प्रकार प्रवासी हिंदी साहित्य हिंदी साहित्य की वैश्विक पहचान का महत्वपूर्ण आधार है।

### संदर्भ सूची :

2. प्रवासी हिंदी साहित्य पर विविध आलोचनात्मक ग्रंथ
3. प्रवासी भारतीय लेखन पर शोध-पत्र एवं पत्रिकाएँ
4. विभिन्न प्रवासी हिंदी रचनाकारों की कृतियाँ
5. "प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति", Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education.
6. "प्रवासी हिंदी साहित्य: अवधारणा, विकास और प्रमुख साहित्यकार", UGC NET हिंदी अध्ययन सामग्री
7. प्रवासी हिंदी साहित्य संबंधी विभिन्न शोध लेख एवं पत्रिकाएँ
8. हिंदी साहित्य का इतिहास – आधुनिक हिंदी साहित्य
9. जनमित्र-साहित्य कला मंच की डिजिटल पत्रिका
10. <https://www.setumag.com/2023/08/Hansa-Deep-Ka-Upanyas-Sahitya.html>
11. साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित प्रवासी व विशेषांक

•